युग-पुरुषकी मांग

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १५ सम्पादक : किशोरलाल मशरूवाला सह-सम्पादक : मगनभाओी देसाओी अंक ३५

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० २७ अक्तूबर, १९५१

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ९; शि० १४

चरखा—नये सन्देशका वाहक*

सारे भारतके मजदूर यूनियनोंका यह बड़ा जलसा अहमदाबादमें होने जा रहा है, अिसका मुझे आनंद है। क्योंकि अगरचे मजदूर हलचल दुनियामें बरसों पहलेसे भी चलती थी, तो भी अहमदाबादमें पूज्य गांधीजीने अिस आन्दोलनकी जो नींव डाली, वह बिलकुल अलग प्रकारकी रही। करीब २५ वर्षोंके अनुभवने बताया है कि महात्मा गांधीका मजदूर संगठनका तरीका सबसे अूंचे दर्जेका है और कामयाब हुआ है। यही कारण है कि अखिल भारतीय मजदूर संस्थाने अुसीके नमूने पर चलनेका खयाल रखा है।

चुनाव नजदीक आ रहे हैं, अिसलिअे मुमकिन है कि आप लोगोंकी बहुत कुछ चर्चाअें और बहस अुसी मुद्दे पर चलेगी। अिस वायुमंडलमें दूसरी बातोंका जिक्र करना शायद बेकार मालूम हो। अिसलिअे मेरे जैसेको संदेश भेजनेमें कुछ संकोच मालूम होता है। क्योंकि चुनावका नशा अब तक मुझे छू नहीं गया है। चुनावसे भी ज्यादा मुझे जिसमें दिलचस्पी लगती है, वह गांधीजीका चरखा है।

चरखा! शायद यह सुनते ही आपको हंसी आवेगी। आप कहेंगे, चरखा ठीक तो है। यह भी सही है कि वह गांधीजीका प्यारा है। लेकिन हम तो मिल-मजदूर और मिल-मालिक हैं। अुस चरखेकी बात हमारे बीचमें कैसे प्रस्तुत हो सकती है?

लेकिन मैं तो मिल-मालिकों और मिल-मजदूरोंके सामने भी चरखा ही रख सकता हूं। अिसके मानी यह नहीं कि मैं आपको अिस वक्त मिलें बंद करने या मिलोंका काम छोड़नेकी सलाह देना चाहता हूं। मैं जानता हूं कि वह व्यवहार्य नहीं होगा।

लेकिन मैं आपसे — मालिक और मजदूर दोनोंसे — यह जरूर कहना चाहता हूं कि आप भले ही अपने कारखाने, जब तक परिस्थितिकी अुनके लिअे मांग है, चलायें। परंतु साथ ही खुद अपने लिअे तो अवश्य चरखा ही चलायें। हाथ कता सूत ही बुनें-बुनावें, और खादी ही अिस्तेमाल करें। मिलोंमें अुन्हींके लिअे कपड़ा तैयार करें, जो किसी भी विवशताके कारण खुद सूत निकाल नहीं सकते, बुन नहीं सकते, खादी खरीद नहीं सकते। अैसे कुछ देश भी हैं। हमारे देशमें भी कुछ लोग अैसे हो सकते हैं। अिनके लिअे मिलें चलाअी जा सकती हैं। परंतु आप जो स्वयं कारीगर हैं और मालिक वर्ग जो अितने बड़े पैमाने पर कपड़ा पैदा करा सकते हैं, अुनके लिअे कोअी वजह नहीं कि वे स्वयं अपने लिअे अपने चरखे पर सूत न निकालें और अपने करघे पर अुसे बुन न लें।

चरखेका संदेश केवल बेकारोंको काम देनेके लिअे अब नहीं रह गया है। न वह सिर्फ हमारे ही देशके लिअे है। वह तो अेक नयी अहिंसात्मक क्रांतिके साधनके रूपमें सारी दुनियाके सामने पेश आ रहा है। खुराक और कपड़ा, जो जीवनकी सबसे पहली दो आवश्यकताअें हैं, अिनमें जो जनता स्वावलंबी नहीं रह सकती, परदेश और सरकारी कर्मचारियोंकी दया और राजनीति पर अवलंबित है, अुस जनताके कुछ लोग चाहे कितना ही धन और मोटा वेतन क्यों न प्राप्त करें, वह जनता स्वराज्य — आजादी — भोग नहीं सकती; और अुस देशमें से कभी भुखमरी, बेकारी और महंगाअी टल नहीं सकती।

मेरी आपसे और आपके नेताओंसे नम्र प्रार्थना है कि आप अिस बड़ी सचाअी पर गंभीरतासे सोचें।

आपका जलसा सफल हो!

वर्धा, १७ अक्तूबर, १९५१ कि० घ० मशरूवाला

* राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेसके ता० २३-२४ अक्तूबर, १९५१ को अहमदाबादमें हुअे चतुर्थ वार्षिक अधिवेशनके अवसर पर भेजा गया सन्देश।

टिप्पणियां

प्रधानमंत्री लियाकतअली खांकी हत्या

पाकिस्तानके प्रधान मंत्री लियाकतअली खांकी हत्याका समाचार सुनकर बड़ा खेद होता है। मैं पाकिस्तानकी जनता और मरहूम प्रधान मंत्रीके परिवारको अपनी हार्दिक सहानुभूति भेजता हूं।

गये दो तीन मासमें प्रायः प्रति सप्ताह गम्भीर राजनीतिक हत्याओंके समाचार हम सुन रहे हैं। अपने ध्येयकी सिद्धिके लिअे हिंसा और विनाशक अस्त्रोंमें विश्वास रखनेवाले राजनीतिक नेताओं और सरकारोंने जनताको युद्ध और द्वेषकी जो व्यवस्थित तालीम दी है, ये घटनाअें अुसीका परिणाम हैं।

मेरे दिल पर अिसका पहला असर यह हुआ है कि सरकारें राज्यके प्रमुख, राज्यपाल, मंत्रियों आदिकी रक्षाके लिअे जो बड़े-बड़े बन्दोबस्त करती हैं, वे कितने व्यर्थ हैं! अेक दृढ़ निश्चयी खूनीके पंजेसे कोअी बच नहीं सकता; फिर, बहुतसे आधुनिक देशोंमें शासक लोग 'नेताओं' के वर्गसे आते हैं, अिसलिअे अुन्हें जनताकी बड़ी-बड़ी सभाओंमें भाषण देना पड़ता है। अुनको समझ लेना चाहिये कि वे तभी तक जी सकते हैं, जब तक अीश्वरकी मर्जी है। अेक अीश्वर ही अुनकी रक्षा कर सकता है। अुनके सामान्य वेशमें या गणवेशमें रहनेवाले रक्षक रक्षाका श्रेय नहीं ले सकते, भले कभी कभी वे षड्यंत्रोंका पता लगा लें और अुन्हें शुरूमें ही तोड़ सकें। राज्यके अधिकारियोंकी रक्षाके लिअे बहुत ज्यादा खर्च करके जो लम्बी-चौड़ी व्यवस्था की जाती है, वह बहुत हद तक अपव्यय ही है और जनता पर अेक निकम्मा बोझ है। याद रखना चाहिये कि जिसने खून करनेका ही निश्चय कर लिया है, वह सारे रक्षकोंसे ज्यादा चतुर, सूझ-बूझवाला, सावधान और साहसी होगा। वह अपनी जान पहलेसे कुरबान करके जाता है। पुलिस और फौजका दबदबा देखकर अब लोगोंके मनमें आदर और मानकी भावना भी पैदा नहीं होती। अुलटे, अिस रक्षा-व्यवस्थाको देखकर नेताओंके प्रति अुनका आदर कम हो जाता है, और वे अुन्हें भीरु समझने लगते हैं।

www.vinoba.in

भारत दुनियाके सामने अेक नये ढंगकी राजनीतिका उदाहरण पेश कर रहा है। अुसके राष्ट्रपति, राज्यपाल और मंत्री यथासंभव रक्षकोंको साथ लिये बिना आजादीके साथ जनतामें आयं-जायं और संकटकी परवाह न करें, तो यह भी हमारी अेक विशेषता हो सकती है।

कायदे-आजमकी मृत्युके बाद पाकिस्तान पर यह दूसरा भारी संकट आया है। कृपालु अीश्वर अुसे अुस रास्ते पर ले जाय, जिससे अुसका अनुग्रह प्राप्त होता है।

वर्धा, १७–१०–'५१ कि० घ० म०

(अंग्रेजीसे)

शराबबन्दी वरदानरूप है

पंचमहाल जिलेके हालोल तहसीलके कंजारी गांवकी रिपोर्टमें बताया गया है कि जबसे पूर्ण शराबबन्दी शुरू हुअी है, तबसे कुम्हारोंके २० परिवारोंने और गोला जातिके १५ परिवारोंने अपना पुराना कर्ज चुका दिया है और अब वे सुख-चैनसे जीवन बिताने लगे हैं। फूलाभाअी मगनभाअी नामक अेक कुम्हार, जिसने पूर्ण शराबबन्दी शुरू होनेके समयसे शराब पीना छोड़ दिया है, पिछले दो-तीन बरसोंमें रु०२४०० की बचत कर सका है।

दूसरे जिलोंसे भी शराबबन्दीके कारण सामान्य आदमीकी आर्थिक हालत सुधरनेकी रिपोर्ट मिली है। पूर्व खानदेशके जामनेर तहसीलके ताकली गांवके मोची परिवार, जो शराबबन्दीके पहलेके दिनोंमें शराबखोरीसे पामाल हो रहे थे, अब जामनेरमें अपना धन्धा चलाकर सुखी जीवन बिता रहे हैं। अुस तहसीलका अेक तेली शराबबन्दीके पहले अपनी आमदनीका बहुत बड़ा हिस्सा शराबके नशेमें बरबाद करता था। लेकिन अब अुसने पांच अेकड़ जमीन खरीद ली है और अुसका व्यवसाय बड़ा अच्छा चलने लगा है।

बेलगांव जिलेके चिकोड़ी तहसीलके निप्पानी गांवका काळस्कर नामका अेक आदमी, जो पहले ताड़ीकी दुकान पर रोजाना मजदूरी पर काम करता था और अपनी सारे दिनकी कमाअी शराब पीनेमें बरबाद कर देता था, अब अेक चायके होटल और लॉजका मालिक है, जिसका फरनीचर और अिन्तजाम काफी अच्छा है।

कनाड़ा जिलेकी हालियाल म्युनिसिपैलिटीके व्यवस्थापक लिखते हैं कि पूर्ण शराबबन्दीके हो जानेसे सड़कों और रास्तों पर होनेवाले लड़ाअी-झगड़ोंके मामले काफी कम हो गये हैं। अकोला ग्राम-पंचायतके सरपंच बताते हैं कि अुनके द्वारा लगाये हुअे भंगियोंके जीवन-मानमें शराबबन्दीके कारण काफी सुधार हो गया है।

(अंग्रेजीसे)

अमेरिकाके बालकोंकी भेंट

अमेरिकाकी तीन छोटी-छोटी लड़कियोंने अपने भारतीय भाअी-बहनोंके लिअे छोटीसी रकमकी भेंट भेजते हुअे हमारे यूनो-प्रतिनिधि श्री बे० न० रावको यह चिट्ठी लिखी:

प्रिय सर बेनेगल नरसिंगराव,

"सूसान किलियन, मेरी बैथ कुमिन्स, और जोजेफिन हॉसमेनका अभिवादन स्वीकार कीजिये।

"कल हम तीनों, जब हमें भूख लगी, केले खाने बैठीं। भोजनके लिअे हमने भगवान्‌को धन्यवाद दिया।

"फिर हमें याद आया कि भारतीय बालकोंको भोजनका कष्ट है। हम अुनके लिअे क्या कर सकती हैं?

"तीन-वर्षीया मेरी बैथने अपने हिस्सेके बचे हुअे केले हाथमें अूपर लेकर कहा: 'मैं अपना हिस्सा देती हूं।'

"तब हमने समझाया कि केले तो भारत तक जाते-जाते खराब हो जायंगे। भारतीय बालकोंको गेहूं खरीदकर भेजनेके लिअे पैसेकी जरूरत है। अिसलिअे हम लोग आपको अपनी भारतीय बहिनोंके अिस कष्टमें अुनके साथ सहानुभूतिका अनुभव करते हुअे यह छोटीसी रकम भेज रही हैं, ताकि आप अिससे अुनके लिअे गेहूं खरीदें।"

श्री बे० न० रावने यह भेंट और चिट्ठी यहां प्रधान मंत्रीके पास भेज दी। प्रधान मंत्रीने भेंट स्वीकार करते हुअे स्वयं अेक चिट्ठी लिखी:

"तुम्हारी भेंट बहुत प्रिय लगी। सचमुच, जो बड़ी-बड़ी भेंटें हमें मिली हैं, अुन सबमें यह भली और बेशकीमती है।" (पी० टी० आअी०)

(अंग्रेजीसे)

राष्ट्रीय योजना—दो निष्ठायें: २

सर्वोदयी दृष्टिकोण

अब हम भारतके विकासके सवाल पर सर्वोदयी दृष्टिकोणके बुनियादी अुसूलोंका विचार करें:

(१) जीवनके प्रति आदर सर्वोदयका पहला अुसूल है। अिस दृष्टिकोणके अनुसार भारतके विकासका अर्थ मुख्यतः भारतमें बसने-वाले मानव और दूसरे प्राणियोंके जीवनका और अुनके व्यक्तित्वका स्वस्थ और सर्वांगी विकास होगा। दूसरे प्राणियोंका समावेश व्यवहारमें अुसी हद तक होगा, जिस हद तक कि वे मनुष्यके जीवनका अभिन्न अंग बन गये हैं। मनुष्यके समाजमें जिनका प्रवेश हो गया है, अैसे प्राणियोंमें गाय सबसे महत्त्वपूर्ण है। वह अिन प्राणियोंका प्रतीक है।

(२) प्रकृति—कुदरतकी सम्पत्ति अिस अुद्देश्यकी सिद्धिका अेक अनिवार्य साधन है, अिसलिअे अुसके विकासकी अुपेक्षा नहीं हो सकती। लेकिन जीवन और प्रकृतिके बीच जीवनका विकास अुद्देश्य होना चाहिये और प्रकृतिका विकास साधन। प्राकृतिक सम्पत्तिका विकास जीवनकी बलि देकर नहीं करना है, और न अुस सम्पत्तिकी अनावश्यक बरबादी ही करनी है। प्रकृति मूक और जड़ भले ही हो, लेकिन अुसका भी 'शोषण'—दुरुपयोग—नहीं किया जा सकता। अगरचे यह सही है कि मनुष्य अकसर अपनी परिस्थितियों और साधनोंसे प्रभावित होता है और अुनका गुलाम भी बन जाता है, लेकिन अन्तमें वह अुनका मालिक और निर्माता है, अुनकी बनाअी हुअी चीज या गुलाम नहीं है। अिसलिअे अुसके व्यक्तित्वके विकासको प्रकृतिके अधीन नहीं किया जा सकता। प्रकृतिका विकास मनुष्यके लिअे और अुसकी सहायतासे करना है। प्रकृतिके विकासके लिअे मनुष्यको जड़ यंत्र नहीं मान लेना है।

(३) अिसलिअे हरअेक राज्य और समाजकी पहली जिम्मेदारी यह है कि वह अपने क्षेत्रके प्रत्येक व्यक्तिको काम दे—जो भी काम और अुसके लिअे जरूरी साधन तत्काल अुपलब्ध हों, वही दे देना चाहिये। काम-धन्धे और अुसके अुपयोगी साधनोंकी अुत्तरोत्तर अुन्नति करना चाहिये। पर अुसका लक्ष्य व्यक्तिका विकास होगा, और अुसके सहकारसे ही अुसका सम्पादन करना होगा। यह अुन्नति अुतनी हद तक जरूरी और अुचित है, जिस हद तक वह हरअेक व्यक्तिके कल्याणकी साधक हो, यानी सर्वोदयकारी हो।

(४) जीवनकी अुन्नति और जीवनकी रिद्धि (रहन-सहनके ढंग) की तरक्कीका फर्क समझना चाहिये। जीवनकी अुन्नति ही बुनियादी चीज है, जीवन-रिद्धि नहीं। रिद्धिकी वृद्धि तो मनुष्यके शारीरिक, बौद्धिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक आदर्श और सुप्त व प्रत्यक्ष शक्तियोंको कम करके अुसके जीवनकी अुन्नतिको ठेस भी पहुंचा सकती है। अिसलिअे प्राकृतिक संपत्तिका संवर्धन जीवनकी अुन्नतिके साथ चलना चाहिये, रहन-सहनके साथ नहीं।

(५) योजनामें दो मुख्य अुद्देश्योंका खयाल करना चाहिये। मनुष्यके विकासकी राहमें मनुष्यकृत अथवा प्रकृतिकृत बाधाओंको

www.vinoba.in

दूर करना और अिस कामके लिअे साधन, तालीम और मार्ग-दर्शनकी व्यवस्था करना।

(६) मनुष्यके विकासकी राहमें आनेवाली बाधाअें अिस तरह हैं:—

(क) शासन-सत्ता तथा अर्थ-अुत्पादनका बेहद केन्द्रीकरण। (ख) जमीन पर कुछ अिने-गिने लोगों या सरकार अथवा कम्पनियों जैसी किसी यांत्रिक जड़-संस्थाकी मालिकी और नियंत्रण; अैसे व्यक्ति या अैसी संस्था चूंकि खेतीका काम खुद नहीं करती, अिसलिअे मालिक बन कर बैठ जाती है। (ग) धन-नियंत्रित अर्थ-व्यवस्था — जिसमें कमाअी, मुनाफा, व्यापार-वाणिज्य, रेवेन्यूकी आमदनी आदि की ही दृष्टिसे जीवनके व्यवसाय किये जाते हैं, अपनी या समाजकी जरूरतें पूरी करनेके लिअे काम नहीं किया जाता। अिस सबका परिणाम यह होता है कि परोपजीवियोंकी संख्या बढ़ जाती है। (घ) गुलामीकी प्रथा और अुसके आजके विविध रूप। (ङ) ब्याजकी प्रथा और अुसके साथ जमीन, खान, कारखानों आदि सम्पत्तिके बड़े-बड़े हिस्सों पर अुन लोगोंका स्वामित्व, जो स्वयं किसान नहीं है या जो कारीगर या मजदूर नहीं हैं। (च) अेक ओर तो राज्य और समाजका समृद्ध वर्ग सामान्य मनुष्यकी — अुसके स्वास्थ्य, तालीम आदिकी बिलकुल परवाह नहीं करता, यह भी नहीं देखता कि अुसे औजार, बीज, कच्चा माल आदि मिल रहा है या नहीं; और दूसरी ओर जनतामें अैसी प्रथाअें, व्यसन, रूढ़ियां, शौक-विलास और प्रलोभन आदि निर्माण करता है, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी अुसे पतनकी राह पर ढकेलते हैं। और (छ) अैसी राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक व्यवस्थामें, जिसके संचालनमें सामान्य मनुष्यका कोअी बुद्धियुक्त हिस्सा नहीं रह जाता, अुसे अपना कर्तृत्व दिखानेका मौका नहीं मिलता, और वह अपनेको चारों ओर बन्धनोंसे घिरा हुआ पाता है।

(७) अबाध शोषणके लिअे दूसरे देश मिल जायं तब तो बात अलग है अन्यथा प्राकृतिक संपत्तिका कितना भी विकास क्यों न किया जाय, जब तक ये सारी अड़चनें दूर नहीं की जातीं, तब तक बहुसंख्यक जनताका हित-साधन भी संभव नहीं, जनताके हर व्यक्तिके हितकी बात तो दूर रही। यह बात हिन्दुस्तान जैसे देशके लिअे, जिसमें जनसंख्या अपनी सीमा तक बढ़ चुकी है, विशेष रूपसे लागू है। अैसी हालतमें बेकारी और महंगाअी बढ़ती ही जाती है, जिससे रोग, गरीबी, भुखमरी, निर्धन लोगों पर गुलामीकी लाचारी, स्त्रियोंकी अरक्षा और अप्रतिष्ठा आदि मनुष्य-जीवनके लिअे अशोभन परिस्थितियां पैदा होती हैं। साथ ही चोरी, डकती, शासन और व्यापारमें भ्रष्टाचार आदि बुराअियां न सिर्फ टिकती हैं, बल्कि बढ़ती हैं। माल और अन्नकी कितनी ही बहुतायत क्यों न हो, तब भी अिनकी कमीसे पैदा होनेवाले दोष वहां रहते हैं, लोगोंकी जरूरतें अपूर्ण रह जाती हैं, और अुन्हें अपनी ताकतें प्रगट करनेका कोअी मौका नहीं मिलता।

(८) अगर सरकार कोअी और योजना न करे, सिर्फ यथा-शीघ्र अिन बाधाओंको ही दूर कर दे, तो भी जनताकी आर्थिक अुन्नति होगी — जल्दी नहीं होगी तो धीरे धीरे होगी। अगर योजनाके द्वारा जनताको विधायक मदद भी पहुंचानी हो, तो अुसके तात्कालिक अुद्देश्य ये होने चाहियें: (क) आहार और पोषणके विषयमें पूरी तरह स्वयंपूर्ण होना, और मैं तो कहूंगा कि अिस क्षेत्रमें न सिर्फ पूर्णता बल्कि विपुलता होनी चाहिये। हमारा पूर्ण स्वराज्य अन्तमें अन्नकी स्वयंपूर्णता पर ही तो खड़ा होगा, अस्त्र-शस्त्रके संभार पर नहीं। अिसलिअे योजनाके दूसरे अंगोंके बजाय अिसे ही प्रधानता मिलनी चाहिये। (ख) अन्नकी सिर्फ विपुलता ही नहीं होनी चाहिये, साधारण स्थितिमें अुसे बहुत दूरसे लाने ले जानेकी जरूरत भी न होनी चाहिये। अिसका मतलब यह है कि स्वयंपूर्ण अिकाअियां जितनी ज्यादा हों, अुतना अच्छा। हमारे यहां यह सामान्य अिकाअी अकसर अेक गांव समझी जाय। (ग) अिसके सिवाय सामान्यतः वह हरअेक सक्षम व्यक्तिके लिअे अिस तरह मिलना चाहिये कि अुसका स्वाभिमान कायम रहे; दान या भीखकी तरह नहीं मिलना चाहिये। अिसका मतलब यह हुआ कि किसी भी सक्षम व्यक्तिके लिअे बेकारीकी नौबत नहीं आनी चाहिये। हरअेकके लिअे काम-धन्धेकी यह व्यवस्था अन्नके स्वयंपूर्ण अुत्पादनके साथ अेक ही योजनाकी दो शाखाओंकी तरह होनी चाहिये। (घ) योजनाका दूसरा विधायक कदम स्वभावतः राष्ट्रकी तालीमकी व्यवस्थाका होना चाहिये। अूपर लिखित अुद्देश्योंकी प्राप्तिकी दृष्टिसे हमारे राष्ट्रके लिअे 'नयी तालीम' के अुसूलोंका आधार लिये सिवा तालीमकी कोअी दूसरी प्रणाली हो ही नहीं सकती। बुनियादी तालीम अिस नयी तालीमका ही अेक अंग है। (ङ) डॉक्टरी अुपचार, दवाअियां, अिन्जेक्शन आदिके पहले पीनेके लिअे (और सींचनेके लिअे भी) साफ पानीकी व्यवस्था होनी चाहिये। शरीरकी और घर-गांवकी स्वच्छताका स्थान दवा आदिके पहले है। (च) खेतीके औजार दिये जाने चाहियें और अिसमें कर्ज नहीं होना चाहिये। सार्वजनिक सेवाके सरकारी काम (डाक, तार, यातायातके साधन, किसानोंके लिअे ट्रेक्टरोंकी या बीजकी व्यवस्था, नमक आदि आवश्यक चीजोंका अुत्पादन-वितरण आदि)का संचालन सरकार करे या सार्वजनिक संघ या कोअी खानगी व्यापारिक संस्था करे। ये काम मुनाफेकी या बचतकी दृष्टिसे न किये जायें। (छ) शराब और नशीली दवायें, चाय, शीत पेय, तम्बाकू आदि बेकार और खर्चीले व्यसन; जुआ, आज-कल प्रचलित शब्द-पहेलियां आदि आसानीसे पैसा कमानेके तरीके; हलके दर्जेके सिनेमा, संगीत, तथा दूसरे प्रदर्शन, जिनसे अनीति बढ़ती है—अिन सबको रेवेन्यू (आमदनी) के लालचसे सरकारको कोअी प्रोत्साहन और लाअिसेंस देनेकी बात ही न सोचनी चाहिये। (ज) जो सरकार अपनी प्रजासे यह कहती है, वह लोक-हित वर्धक (Welfare State) राज्य तब तक नहीं कायम कर सकती, जब तक कि जनसंख्या कम न हो जाय। वह शासनके लिअे अुतनी ही अयोग्य है, जितनी कि वह दूसरी जो युद्ध तथा अपनी अन्य साम्राज्य-वादी आकांक्षाओंकी सिद्धिके लिअे जनताको जनसंख्या बढ़ानेके लिअे मजबूर करती है। जो तालीम मनुष्यको अपने मनोविकारोंका संयम करनेमें अक्षम बनाती है और सिर्फ अनुचित साधनोंके द्वारा अुनके परिणामोंसे बचनेकी सलाह देती है, वह तालीम अपनी असफलता तो प्रगट करती ही है, अुस शासनकी असफलता भी बताती है। अिसलिअे शिक्षाकी योजनाका तो पूरा परिष्कार होना चाहिये।

सर्वोदय योजनाके मूलभूत अुद्देश्योंमें से कुछ मेरी समझके अनुसार ये हैं। योजना अल्पकालिक हो या दीर्घकालिक, अुसका नियोजन अिन अुद्देश्योंकी सिद्धिके लिअे होना चाहिये।

पंचवर्षीय योजनाकी अिस कच्ची रूपरेखाकी समीक्षा अिन दो दृष्टियोंके अनुसार अलग अलग होगी। सर्वोदयके अुसूल जिस हद तक समझे जायंगे और राष्ट्रके द्वारा माने जायंगे, अुसी हद तक सर्वोदयी दृष्टिकोण द्वारा की गयी आलोचना अुचित मानी जायगी।

अिसका यह आशय नहीं है कि कुछ विशिष्ट मुद्दों पर दोनों पक्षोंकी योजनाअें और लक्ष्य समान नहीं हो सकते। कुछ विषय तो अैसे होंगे ही कि अुन पर किसी भी दृष्टिकोणसे विचार किया जाय, योजना वही बनी रहेगी। लेकिन जिन कुछ विषयों पर मतभेद है, वे अितने महत्त्वपूर्ण हैं कि योजना-समितिकी योजनाका यदि ज्योंका त्यों अमल हुआ, तो राष्ट्रका जीवन अैसे सांचेमें ढल जायगा कि फिर सर्वोदयकी दिशामें कोअी परिवर्तन मूलगामी क्रांतिके बिना नहीं हो सकेगा।

वर्धा, २६-९-'५१ कि० घ० मशरूवाला

(अंग्रजीसे)

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

२७ अक्तूबर १९५१

युग-पुरुषकी मांग

[यह अंक दिवालीके अवसर पर प्रकाशित हो रहा है। अकालके आसार दिख रहे हैं और लोग चिंतित हैं। तब भी दिवालीके त्यौहारके साथ कुछ अुत्साह तो आ ही जाता है। अिस सप्ताहमें बाहरी स्वच्छता, मनकी पवित्रता तथा दानवृत्तिका सहयोग होता है। अिस मौके पर मैं पाठकोंको गांधी जंयतीके दिन, ता० २ अक्तूबरको, सागरमें आयोजित सर्वोदय सम्मेलनमें दिया हुआ श्री विनोबाका यह भाषण भेंट करता हूं। —कि० घ० म०]

"विश्वानि देव सवितर् दुरितानि परासुव,
यद् भद्रं तन्न आसुव।
मधु वाता ऋतायते।
मधु क्षरंति सिन्धवः।
माध्वीर् नः सन्तु ओषधीः।
मधु नक्तं, अुत अुषसः।
मधुमत् पार्थिवं रजः।
मधु द्यौर् अस्तु नः पिता।
मधुमान् नो वनस्पतिः।
मधुमान् अस्तु सूर्यः।
माध्वीर् गावो भवन्तु नः॥"

मंगल-संकल्पका दिन

मेरे परम प्रिय मित्रो,

अिस पैदल यात्रामें अकसर हम लोग हर गांवमें अेक ही दिन ठहरते हैं। लेकिन यहां अब महाकोशलका यह आखिरी बड़ा मुकाम है, अिसलिअे सर्वोदय-सेवकोंका अेक सम्मेलन यहां बुलाया गया है। आज और कल, दो रोज यहां ठहरना होगा।

आजका दिन अेक पवित्र दिन है। वैसे तो भगवान्‌के दिये हुअे सारे दिन पवित्र ही होते हैं। और खास कर वे दिन अत्यंत पवित्र होते हैं, जब मनुष्यको कोअी अच्छा विचार सूझता है, अच्छा काम अुससे होता है। लेकिन अलावा अिसके, समाज-जीवनमें और भी कुछ अैसे दिन होते हैं, जब कि मनुष्यकी सद्‌भावना जाग्रत हो अुठती है। अैसे दिनोंमें से आजका दिन है।

परमेश्वरकी योजना

मेरी यह यात्रा परमेश्वरने मुझे सुझाअी है, अैसा ही मुझे मानना पड़ता है। छः माह पहले मुझे खुदको अैसा कोअी खयाल भी नहीं था कि जिस कामके लिअे आज मैं गांव-गांव, द्वार-द्वार घूम रहा हूं, वह मुझे करना होगा, अुसमें मुझे परमेश्वर निमित्त बनायेगा। लेकिन परमेश्वरकी कुछ अैसी योजना थी कि जिससे मुझे यह काम सहज ही स्फुरित हुआ और अुसके अनुसार कार्य भी होने लगा। होते-होते अुसे अैसा रूप मिल गया, जिससे लोगोंकी नजरोंमें भी यह बात आ गयी कि यह अेक शक्तिशाली कार्यक्रम है, जो हमारे देशके लिअे ही नहीं, बल्कि आजके कालके लिअे भी अत्यन्त अुपयोगी है। यह अेक युग-पुरुषकी मांग है, अिस तरहकी भावना लोगोंके दिलमें आ गयी। अुसका प्रतिबिम्ब मेरे हृदयमें भी अुठा। नतीजा यह हुआ कि तेलंगानाकी यात्रा समाप्त करनेके बाद बारिशके दिन वर्धामें बितानेके लिअे मैं परंधाम आ बैठा और दो-ढाअी महीने वहां रह कर आज फिरसे निकल पड़ा हूं और घूमते-घूमते, आपके अिस गांवमें आ पहुंचा हूं।

अुस विशेष हस्तीकी मौजूदगीमें

आज महात्मा गांधीके जन्मका दिवस है। हम रोज सूत कातते हैं। आज भी यहां पर समुदायके साथ सूत-कताअी हुअी। चंद लोग अुसमें संमिलित थे। तादाद अुनकी बहुत कम थी, फिर भी आजकी सूत-कताअीमें मुझे अेक विशेष हस्तीकी अनुभूति हुअी और अभी जो मैं बोल रहा हूं, वह अुसकी हाजिरीमें बोल रहा हूं।

भगवान्! मेरी हस्ती भी मिटा

जो काम मैंने अुठाया है, वह तो गरीब लोगोंकी भक्तिका काम है, श्रीमान् लोगोंकी भक्तिका काम है, सब लोगोंकी भक्ति अुसमें हो जाती है। मेरा अपना विश्वास है कि यह कार्य सब लोगोंके दिलोंमें जंचनेवाला है। मैं जमीन मांगता फिरता हूं। किसी रोज कम मिलती है, तो मुझे यह नहीं लगता कि जमीन कम मिली। मुझे यही लगता है कि जो भी मुझे मिलता है, केवल प्रसाद-रूप है। आगे तो भगवान् खुद अपने अनंत हाथोंसे भर-भरकर देनेवाला है। और जब वह अनंत हाथोंसे देने लगेगा, तब मेरे ये दो हाथ निकम्मे और अपूर्ण साबित होंगे। आज तो केवल अेक हवा तैयार करनेका काम हो रहा है। परमेश्वरका बल अिस कामके पीछे है, अैसा मैं प्रतिक्षण महसूस कर रहा हूं। आजके पवित्र दिन मैं पहले अुससे यह प्रार्थना करता हूं कि जमीन तो मुझे लोग दें, न दें, जैसी तेरी अिच्छा हो वैसा होने दे। लेकिन मेरी तुझसे अितनी ही मांग है कि मैं तेरा दास हूं, मेरी हस्ती मिटा, मेरा नाम मिटा। तेरा ही नाम दुनियामें चले, तेरा ही नाम रहे, और जो भी राग-द्वेष आदि विकार मेरे मनमें रहे हों, अुन सबमें से तू अिस बालकको मुक्त कर। अिसके सिवा अगर मैं और कोअी भी चाह अपने मनमें रखता हूं, तो तेरी कसम! मैं तुलसीदासकी भाषामें बोल रहा हूं, लेकिन वह मेरी आत्मा बोल रही है:

"चहौं न सुगति सुमति संपति कछु
रिधि सिद्धि विपुल बड़ाअी।
हेतुरहित अनुराग रामपद,
बढ़ै अनुदिन अधिकाअी।"

मुझे और किसी चीजकी जरूरत नहीं, तेरे चरणोंमें स्नेह बढ़े, प्रेम बढ़े।

'संत सदा सीस अूपर, राम हृदय होअी'

लोग मुझे पूछते हैं, आप दिल्ली कब पहुंचेंगे? मैं कहता हूं, मुझे मालूम नहीं, सब अुसकी मर्जी पर निर्भर है। मेरी कुछ अुम्र भी हो चुकी है। शरीर भी कुछ थक गया है, लेकिन अन्तरमें यही वृत्ति रहती है और नित अुसीका अनुभव करता हूं। जरा पांच मिनिट भी विश्राम मिलता है, थोड़ा भी अेकान्त मिलता है, तो मनमें यह वासना अुठती है कि मेरा सारा अहंकार खतम हो जाय। अिसके सिवा और कुछ भी विचार मनमें नहीं आता। आज परमेश्वरके साथ मैं क्या भाषा बोल रहा हूं? मनुष्यकी वाणीसे क्या बयान कर रहा हूं? मैं बोल रहा हूं कि "आज मैं अीश्वरके साथ बापूकी हस्तीका अनुभव कर रहा हूं। मुझ पर अुनके निरन्तर आशीर्वाद रहे हैं। मैं तो स्वभावसे अेक जंगली जानवर रहा हूं, न मुझे सभ्यता ही मालूम है। मैं तो बड़े-बड़े लोगोंके संपर्कसे भी डरता हूं। लेकिन आजकल निःशंक होकर हर किसीके घरमें चला जाता हूं। जैसे नारदमुनि देवोंमें, राक्षसोंमें, मानवोंमें, सबमें चले जाते थे, अुनको कहीं भी अप्रवेश नहीं था, वही हालत मेरी है। यह सब बापूके आशीर्वादका चमत्कार है। मेरा विश्वास है कि मेरे अिस कामसे दुनियाके जिस किसी गोशेमें वे बैठे होंगे, अुनके हृदयको समाधान हो रहा होगा। 'मारगमें तारण मिले, संत राम दोअी ... संत सदा सीस अूपर, राम हृदय होअी।' मीराबाअीका यह वचन मुझ पर भी ठीक लागू होता है। मुझे भी मार्गमें दो ही

www.vinoba.in

तारण मिले। भगवान्‌की कृपासे अेकका आशीर्वाद मेरे सिर पर रहा है, दूसरेका स्थान मेरे हृदयमें रहा है।

यह सब अुसीकी प्रेरणा है

मेरे भाअियो, आज मैं कुछ बोल तो रहा हूं, लेकन मुश्किलसे बोल सकनेवाला हूं। कोशिश तो मैं यह करूंगा कि जो कहूं, अच्छी तरह कह सकूं। मुझे बहुत दफा लगता है कि मैं घूमनेके साथ-साथ कुछ बोल भी लेता हूं, लेकिन अिससे परिणाम क्या होता होगा? कलकी ही बात है। अेक गांवमें, जहां हम ठहरे थे, जहां सारा दिन बिताया था और जहां मेरा अेक व्याख्यान भी हुआ था, वहां अुस व्याख्यानके परिणाम-स्वरूप या कैसे भी कहिये, चार अेकड़ जमीन मुझे मिली। फिर व्याख्यान समाप्त करके मैं अपनी जगह पर गया और अुपनिषद्‌का चिंतन शुरू किया। आजकल मैंने अपने पास अुपनिषद् रखे हैं। दस मिनिट हुअे कि अेक भाअी आये, जो न मेरी प्रार्थनामें शामिल थे, न मेरा व्याख्यान सुन पाये थे। कहने लगे, "जमीन देने आया हूं।" ये भाअी ६ मीलकी दूरीसे आये थे। अपनी ६ अेकड़ जमीनमें से १ अेकड़ जमीन मुझे दे गये। मैंने सोचा — किसकी प्रेरणासे यह हो रहा है? जहां मैं दिन भर रहा, जहां मैंने व्याख्यान सुनाया, वहां ४ अेकड़ और जहां मेरा व्याख्यान नहीं हुआ, वहांसे अेक गरीब आता है और ६ में से अेक अेकड़ दे जाता है। यह हुआ न हुआ कि अेक दूसरे भाअी, जो काफी दूरसे आये थे, बावन अेकड़ देकर चले गये। मैं सोचने लगा कि लोगोंके दिल पर किस चीजका असर होता है? आदमीको शब्दोंकी जरूरत क्यों पड़नी चाहिये? अगर केवल जीवन शुद्ध हो जाय, तो अेक शब्द भी न बोलना पड़े और संकल्प-मात्रसे केवल घर बैठे काम हो जाय। लेकिन वैसा शुद्ध जीवन परमेश्वर जब देगा तब होगा। आज तो वह मुझे घुमा रहा है, मांगनेकी प्रेरणा दे रहा है। अिसलिअे मैं बोलता हूं और मांगता हूं। लेकिन मेरे मनमें यह सन्देह नहीं है कि मेरे मांगनेसे कुछ होनेवाला नहीं है। जो होनेवाला है या हो रहा है, सब अुसीकी प्रेरणासे हो रहा है।

मध्यप्रदेशकी सेवामें

मैंने शुरूमें ही कहा कि महाकोशलका यह आखिरी बड़ा मुकाम है। परन्तु अगर दिल्लीसे वापिस आना हुआ, तो महाकोशलमें से गुजरना पड़ेगा। यहांके लोगोंसे मिलनेका फिर अेक और अवसर मुझे प्राप्त होगा। मैं अिस मध्यप्रदेशसे बहुत कुछ आशा रखता हूं। अिसलिअे कि मैं तीस सालसे अिस मध्यप्रदेशमें ही रहता आया हूं। मेरे जीवनका जवानीका समय मैंने मध्यप्रदेशके लोगोंकी सेवामें बिताया। यहांके लोगोंने देखा कि कअी राष्ट्रीय आन्दोलन आये और गये, कअी चुनाव आये और गये, लेकिन यह शख्स अपने काममें नित-निरन्तर रत रहा। अुसने न अिधर देखा, न अुधर। अिस तरह मेरे जीवनकी बहुतसी तपस्या अिस मध्यप्रदेशमें हुअी। अिसके अलावा, अिस मध्यप्रदेशकी जेलमें ४ साल रहनेका मौका भी मुझे मिला है। वहां अेक-दूसरेके निकट संपर्कमें आना हुआ। जेलमें जो रहते हैं, वे अेक-दूसरेको अच्छी तरह परख लेते हैं। वहां २४ घंटे परस्पर-सम्बन्ध आता है। तो अिस तरह मैं आपके अुत्तमोत्तम लोगोंके सम्पर्कमें आया। अुन लोगोंने मेरा जीवन देखा। मैंने अगर कुछ किया, तो सब पर प्रेम ही किया और कुछ नहीं किया। वहां कितने ही विचारके लोग थे, अलग-अलग पक्षके भी थे, परन्तु मैंने तो मनुष्यको मनुष्यके नाते पहचाना। अिस तरह मेरा सारा जीवन अिन लोगोंने बरसों तक देखा। मेरा कोअी गुण-दोष अिनसे छिपा नहीं रहा। जिनके साथ मैंने दिनरात बिताये, अुनके सामने कोअी गुण-दोष छिपकर नहीं रह सकता था। मैंने देखा कि अैसा अेक भी भाअी नहीं, जिसका प्रेम मुझे नहीं मिला हो। अिसलिअे मैं आप सबसे बहुत आशा रखता हूं।

पांच करोड़ अेकड़की भूख है!

मैं चाहता क्या हूं? मेरे अेक भाअीने लिखा है कि आपके लिअे हजार रुपये जमा हुअे हैं और सौ आदमियोंके भोजनका प्रबन्ध भी किया गया है। लेकिन यहां जो कुछ हुआ है और हो रहा है, अेक परिषदके लिअे हो रहा है। मेरे स्वागतके लिअे अितने पैसेकी जरूरत नहीं। मेरा पेट बहुत छोटा है। अुसके लिअे अितने पैसेकी आवश्यकता नहीं। मेरा काम किस तरह आगे बढ़े, अिस बारेमें जो सेवकगण यहां आये हैं, वे विचार-विमर्ष करेंगे और अपनी-अपनी जगह जाकर काम भी करेंगे, अिसलिअे यह परिषद बुलायी है। लेकिन यद्यपि मेरी भूख बहुत कम है, तथापि दरिद्र-नारायणकी भूख बहुत ज्यादा है। अिसलिअे जब मुझसे पूछते हैं कि आपका अंक क्या है, कितनी जमीन आपको चाहिये, तो मैं जवाब देता हूं, "पांच करोड़ अेकड़!" जो जमीन जेरेकाश्त है, अुसीकी बात मैं कर रहा हूं। अगर परिवारमें पांच भाअी हैं, तो अेक छठवां मुझे मान लीजिये। ४ हों तो ५वां। अिस तरह कुल जेरेकाश्त जमीनका यह पांचवां या छठवां हिस्सा होता है।

हिन्दुस्तानकी प्रकृति और क्रांतिका यह तरीका

यह जो काम हो रहा है, वह सामान्य दानका काम नहीं है, बल्कि भूदानका है। अगर हम किसीको अेक रोज भी खाना खिलाते हैं, तो बहुत पुण्य मिलता है। अेक रोजके अन्नदानका अगर अितना मूल्य है, तो अेक अेकड़ जमीनका, जिससे अेक आदमीकी सारी जिन्दगी बसर हो सकती है, कितना मूल्य होगा? अिसलिअे दरिद्रनारायणके वास्ते सारे लोगोंसे कुछ-न-कुछ मिलना चाहिये। अिसीका नाम यज्ञ है। अिसलिअे हर शख्ससे मैं कहता हूं कि भाअी, मुझे कुछ न कुछ दे दो। हिन्दुस्तानमें यह अेक बड़ी भारी क्रांति होने जा रही है। मेरी आंखोंके सामने मैं वह दृश्य देख रहा हूं। अेक तो वह क्रांति, जो रशियामें हो चुकी है। दूसरी वह, जो अमेरिकामें हो रही है। दोनों क्रांतियां मैं देख रहा हूं। दोनोंमें से अेक भी हिन्दुस्तानकी प्रकृतिके अनुकूल नहीं है, न यहांकी सभ्यताके अनुकूल है। मैं मानता हूं कि हिन्दुस्तानकी प्रकृतिमें से अेक अैसा क्रांतिकारी तरीका प्रगट होना चाहिये, जिसका आधार केवल प्रेम-भाव ही हो। अगर लोग अपनी अिच्छासे जमीनें देने लग जाते हैं, तो देखते देखते हिन्दुस्तानकी हवा बदल सकती है और हिन्दुस्तानसे सारी दुनियाके लिअे मुक्तिका प्रवेशद्वार खुला हो सकता है। अितनी महान् आकांक्षा अिस यज्ञमें भरी है। और मैं देखता हूं कि वह सफल होनेवाली है। अिसलिअे जो कांग्रेसवाले हैं, सोशलिस्ट हैं, किसान मजदूर प्रजा-पार्टीवाले हैं और जो किसी पार्टीमें नहीं हैं, अुन तमाम व्यक्तियोंसे मेरी प्रार्थना है कि भूदानके अिस प्रश्नको समझें और अिस पर गौर करें। अपने मामूली काम तो रोज-बरोज चलते ही रहेंगे, पर यह काम आवश्यक है। अिसे करना चाहिये। हिन्दुस्तान तो अिससे बच ही जायगा, साथ ही और देशोंको भी बचनेका रास्ता मिल जायगा।

रोगोंकी जड़ मौजूदा अर्थ-व्यवस्थामें

जहां जाता हूं, वहां लोग मुझे सुनाते हैं कि काला-बाजार जोरोंसे हो रहा है, रिश्वतखोरी बढ़ रही है। लेकिन मेरे दिल पर अुसका कोअी असर नहीं होता। मैं यह माननेको तैयार नहीं कि हिन्दुस्तानका हृदय बिगड़ गया है। मैं यह भी माननेको तैयार नहीं कि श्रीमानोंके दिल बिगड़ गये हैं। यह हिन्दुस्तानकी भूमि बहुत सुजल, सुफल, मलयज-शीतल है। रोज हम अुसका गुणगान करते हैं। लेकिन यह कोअी बड़ी संपत्ति नहीं। हिन्दुस्तानमें जो पारमार्थिक संपत्ति है, अुसकी कीमत सबसे ज्यादा है। बुजुर्गोंने अितनी पारमार्थिक संपत्ति हमें विरासतमें दी है। मेरा कहना है कि यद्यपि देशमें काला-बाजार और रिश्वत चल रही है, तथापि यह नहीं हो सकता कि हिन्दुस्तानके सारे लोग बिगड़ गये हैं। अिसलिअे हमें अिस बुराअीका कारण ढूंढना

www.vinoba.in

चाहिये। लीन युतंगने लिखा है कि हिन्दुस्तान "गॉड-अिन्टॉक्सिकेटेड" मुल्क है। अुनका यह वर्णन हिन्दुस्तानकी आज तककी जनताका यथार्थ वर्णन है। आज भी हमारी जनता अीश्वर-परायण ही है। लेकिन अितनी सारी अनीति फैली दीखती है, अुसका मतलब यही है कि हिन्दुस्तानकी अर्थ-व्यवस्था बिगड़ गयी है, अिंतजाम बिगड़ा हुआ है। अिसलिअे लोग प्रवाहमें आकर गलतियां कर जाते हैं। अगर हम आर्थिक व्यवस्था बदल सकें, तो आप देखेंगे कि हिन्दुस्तानके लोग सारी दुनियामें अेक मिसाल पेश कर सकते हैं।

अिसलिअे गांधीजीके बाद सर्वोदयके सिद्धांतमें माननेवाले हम कुछ लोगोंने अेक समाज बनाया है, जिसमें कोअी किसीका द्वेष नहीं करता। सब सबसे प्रेमभाव रखते हैं। कोअी किसीका शोषण नहीं करता। मेरा विश्वास है कि जैसे ही हम शोषणरहित समाजका निर्माण कर सकेंगे, हिन्दुस्तानके लोगोंकी प्रतिभा प्रगट हुअे बिना नहीं रहेगी। अिसलिअे सर्वोदयवालोंने निश्चय किया है कि यह समाज-रचना हम बदल देंगे। मेरा अिसमें विश्वास है, नहीं तो मुझे अिस तरह खुले दिलसे जमीनें मांगनेकी हिम्मत नहीं होती। मैं जानता हूं कि जितनी मेरी योग्यता है, अुससे ज्यादा फल अीश्वरने मुझे दिया है। मुझे जरा भी शिकायत नहीं कि मुझे कम फल मिला। अिसलिअे मेरा काम अितना ही है कि लोगोंको मैं अपना विचार समझाअूं।

विनोबाकी अुत्तर भारतकी यात्रा—२

विनोबाकी अुत्तर-यात्राकी दूसरी मंजिल सतपुड़ाकी पहाड़ियोंमें से गुजरी। अिस पहाड़ी प्रदेशके गोंड-निवासियोंने हर जगह अुनका हार्दिक स्वागत किया। नीचे पाठकोंकी जानकारीके लिअे हम ग्रामवार भूदानके आंकड़े दे रहे हैं:—

ता०	मुकाम	जनसंख्या	रास्तेके गांव	कुल भूदान अेकड़में
१८ सितम्बर	अुमरनाला	३००	—	५०.८०
१९ "	छिंदवाड़ा	३५,०००		५४.००
			सरना	३.५५
			बनगांव	११.५०
२० "	सिंगोड़ी	१२९५		७९.५५
२१ "	अमरवाड़ा	२९५५		१०८.१३
			कुनावूल	१.००
			जुंगारवली	९.००
२२ "	सर्लाकापा	३२०		५०.९५
२३ "	हर्रअी	१६६९		१०३३.३३
२४ "	कंदेली	४८		५.००
२५ "	नरसिंहपुर	१३०००		६२.९३
२६ "	करेली	७०००		३१९.००
२७ "	बरमान	९३१		५२७.७५
			कुल	२,३१६.४९

गांवका नाम	१ से २५ अेकड़ तक देनेवाले	२५ से ५० अेकड़ तक देनेवाले	१०० अेकड़से अूपर देनेवाले
अुमरनाला	७	—	—
छिंदवाड़ा	६	—	—
सरना	४	—	—
बनगांव	८	—	—
सिंगोड़ी	४२	—	—
अमरवाड़ा	३४	—	—
कुनावूल	१	—	—
जुंगारवली	६	—	—
सर्लाकापा	१८	—	—
हर्रअी	२०	—	१
कंदेली	३	—	—
नरसिंहपुर	११	—	—
करेली	१७	—	१
बरमान	१९	१	२
	१९६	१	४

अिन आंकड़ोंको पढ़कर आंखें खुलती हैं। छिंदवाड़ा और नरसिंहपुर जैसे बड़े शहरोंने कोअी अुत्साह नहीं दिखाया, लेकिन गांवोंकी अुदारता मनको प्रसन्न कर देनेवाली है। शहर अैसे अुत्साहहीन क्यों हैं? गांवोंमें विनोबाको जनताका सीधा संपर्क मिलता है। अुनके शब्द अुनके सरल और अुदार हृदयको छूते हैं। वे गरीबोंकी वेदना पहचानते हैं, बेजमीन असहायोंका दुःख अुनका जाना हुआ है। अिसके सिवा गांवोंकी जनताका भोला हृदय आकाशकी भांति विशाल है। विनोबा अुनसे सहज आत्मीयताके साथ बोलते हैं; अपना अेक हाथ पसारते हैं, तो वे दोनों भर देते हैं। शहरोंमें या तो जमींदारों और किसानोंको कांग्रेस कार्यकर्ताओंसे शिकायत है या कांग्रेस कार्यकर्ताओंमें अुनके पास जानेका साहस नहीं है; क्योंकि कांग्रेस कार्यकर्ता खुद जमींदार हैं और दूसरोंसे मांगनेके पहले अुन्हें स्वयं भी तो भूदानकी तैयारी दिखानी चाहिये। अिसके सिवा, अुन्होंने अिस आन्दोलनके महत्त्व और अुसकी दूरव्यापी संभावनाओंको समझा नहीं है।

तेलंगानामें अिसका अुलटा हुआ। गांववालोंने जितना वे दे सकते थे, अुतना जी खोलकर दिया, लेकिन शहरोंने भी अपनी जिम्मेदारी समझी और निभाअी। प्रत्येक शहरका दान हजार अेकड़के अूपर गया। सूर्यपेठ, महबूबाबाद और वारंगल पीछे नहीं रहे। प्रत्येकने हजार अेकड़ जमीन दी। आदिलाबादने तो दो हजार अेकड़ दिये। परंतु मध्यप्रदेशमें, जिनसे हम अुम्मीद करते थे कि वे अिस कामको अुठायेंगे और अपने नेतृत्वसे दूसरे बड़े जमींदारोंको तैयार करेंगे, वे काफी प्रयत्न नहीं कर पाये। अिसलिअे सारा दान विनोबाके ही प्रत्यक्ष निवेदनके फलरूप मिल रहा है। अिसके सिवा, विनोबा किसी जगह अेक दिनसे ज्यादा ठहरते भी नहीं। जो हो, अुन्हें अिससे कोअी निराशा नहीं है। अगर गरीब अपनी गाढ़ी कमाअीमें से दान कर रहे हैं, तो श्रीमन्त भी बच नहीं सकेंगे। अुन्हें भी कल, और कल नहीं तो परसों, जनताका अनुगमन करना ही पड़ेगा। यही होगा कि अुदाहरण पेश करनेका श्रेय अुन्हें नहीं मिलेगा। विनोबा कहते हैं: "सारी भूमि गोपालकी है, दरिद्रनारायणकी है, और वह अुसे मिलेगी। आजका क्षण यही तकाजा लेकर आया है। ये शब्द मेरे नहीं हैं। यह तो भगवान्‌की अिच्छा है, जो मेरे द्वारा प्रगट हो रही है।" लेकिन जनताने अिस विचारका महत्त्व पहचान लिया है। आन्दोलनके पक्षमें अुसका नैतिक समर्थन अुसके अुत्साहमें और अुसके दानमें, वह कितना भी छोटा क्यों न हो, दीखता है। बापू भी तो दरिद्रनारायणके लिअे दरिद्रनारायणसे कौड़ी-कौड़ीका संग्रह करते थे। अभी तक जो २०१ दान मिले हैं, अुनमें से सिर्फ चार ही सौ अेकड़से ज्यादाके हैं। अिनमें से अेक, जो ठाकुर अुदयभानु शाहने दिया, ९६३.३३ अेकड़का है। बाकी तो सब वर्षाकी छोटी-छोटी बूंदों जैसे हैं, पर हमारी खेतीके लिअे वर्षाकी अुन नन्हीं बूंदों जैसे ही लाभदायी!

रामायणमें प्रसंग आता है: सुग्रीव और हनुमान दोनोंने रामको देखा। हनुमान तो प्रभुको पहले ही दर्शनमें पहचान गये और तत्काल अपनेको समर्पण कर दिया। लेकिन सुग्रीव रामकी शक्तिका परिचय पानेके बाद ही अुनके मित्र बने। बापूके जीवनमें भी यही हुआ। जमनालालजी, महादेवभाअी तथा कुछ और अिने-गिने लोगोंके सिवा गांधीजीको सिर्फ जनताने पहचाना। बुद्धिजीवी वर्गने तो सबके अन्तमें। वे तो अुनके पास तभी आये, जब गांधीजी अुनकी

www.vinoba.in

परीक्षामें पास हो गये। अिसी तरह पंजाबके मेवों, तेलंगानाके निवासियों और सतपुड़ाके गोंड़ोंने अेकदम समझ लिया कि यह व्यक्ति हमारा सच्चा शुभचिन्तक और सेवक है। लेकिन हमारे राजनैतिक कार्यकर्ता विनोबाके संदेशका अर्थ, अुनके अिस आन्दोलनका क्रान्तिकारी महत्त्व — जो सिर्फ भारतके लिअे नहीं, बल्कि युद्धसे परेशान अिस सारी दुनियाके लिअे है — अभी नहीं, समय आने पर ही समझेंगे। अहिंसामें जल्दबाजी और अधीरताकी गुंजाअिश नहीं है, और हम अुनके लिअे प्रतीक्षा करते रहें। हां, सर्वोदयके सेवकोंको तो वह दिन जल्दी लानेके लिअे अपनी पूरी मेहनत करनी ही चाहिये।

अिस तरह हमने सतपुड़ा पार किया। पूरा प्रदेश बहुत रमणीय है। अिसकी अूंचाअी ३००० फुट है, लंबाअी ७५ मील और चौड़ाअी २४ मील। अधिकांश जमीन बिलकुल मामूली श्रेणीकी है, लेकिन हर्रअी जागीरकी जमीन, जहां २३ सितम्बरको पहुंचे थे, बहुत अच्छी है। प्रदेशके निवासी गोंड़ीकी अपेक्षा हिन्दी ज्यादा अच्छी बोलते हैं। जनसंख्याका घनत्व प्रति वर्गमील ८८ व्यक्ति हैं। गांवोंके अिलाकेमें ८२। शहरोंकी आबादी पूरी आबादीका ७ प्रतिशत है, पर सिर्फ छिंदवाड़ामें ही अुसका ४ प्रतिशत आ जाता है। जागीरोंमें तो शहर हैं ही नहीं। जनसंख्याके अिन आंकड़ोंसे जितना दीखता है, अुससे भी ज्यादा लोग खेतीका काम करते हैं। छिंदवाड़ेके अिस अिलाकेमें पहले "गौलियों' का राज्य था, फिर गोंड़ोंका हुआ। गोंड़ोंके हाथसे मराठोंके हाथमें सत्ता गअी और मराठोंके हाथसे अंग्रेजोंके हाथमें आयी। अैसा मालूम होता है कि गोंड़ ६० वर्ष तक स्वतंत्र रहे। अुनकी अर्थ-व्यवस्थाकी शोध होनी चाहिये। गोंड़ोंके राज्यमें मजदूरी अनाजके रूपमें दी जाती थी और खेतीका काम हाथसे होता था।

गोंड़ जागीरदार श्री अुदयभानु शाहने जब अपनी अुदार भेंट अर्पित की, तब विनोबाने गांवके लोगोंसे कहा: "यह भेंट नलकी मोटी धारका पानी है, लेकिन जमीनकी प्यास तो वर्षाकी बूंदोंसे ही बुझेगी। यह काम तुम्हारे ही वशका है।" बस, होड़ मच गयी। लोग अेकके बाद अेक अुठे और ७० अेकड़ हो गये।

ठाकुर साहबसे विनोबाने कहा: "अिस दानसे अभी आपको संतोष नहीं मानना चाहिये। कुछ युवकोंको सेवाग्राम भेजिये। अुन्हें सर्वोदय-कामकी तालीम दिलवाअिये। वे लोग गोंड़वानेका नवनिर्माण करेंगे।" विनोबाने जमनालालजीका अुदाहरण दिया और कहा: "देखो, अुन्होंने वर्धामें कितना काम किया है। आप अुनके आदर्शका अनुकरण कर सकते हैं।"

दान मांगनेका ढंग

जमीन मांगनेका विनोबाका अपना विशेष ढंग है। गांववाले अुनके दर्शनके लिअे सड़क पर खड़े रहते हैं। विनोबा आते हैं और अुनके बीचमें खाट पर बैठ जाते हैं। लोगोंकी पीठ पर प्रेमसे हाथ रखते हैं, और पांच मिनटमें अुन्हें अपना काम और अुसका महत्त्व समझा देते हैं। बस, जमीन मिलने लगती है। कभी अेक अेकड़, कभी पांच और कभी आठ। अिसके बाद वे अुठ खड़े होते हैं और आगे बढ़ जाते हैं। अेक जगह गांवके अेक भाअी फूल-माला लेकर आये। विनोबाने कहा, "क्या मैं मालाओंके लिअे आया हूं? मालायें तो मुझे परंधाममें भी मिल सकती हैं। मुझे तो गरीबोंके लिअे जमीन चाहिये। दे सको तो दो।" अिस तरह बातचीत होती है और श्रोता विगलित हो जाता है, तथा अुससे जो बन पड़ता है, आगे ला रखता है। अदालतोंमें लोग अेक अेक अिंच भूमिके लिअे लड़ते हैं। यहां वे अपनी अिच्छासे त्यागपूर्वक दे डालते हैं। विचार जड़ पकड़ रहा है और फैल रहा है।

हरअेक गांवमें विनोबा अपनी बात नये ढंगसे रखते हैं। अपने तर्क हमेशा नये शब्दोंमें नअी तरहसे पेश करते हैं। काम खुद जितना महान है कि वह अुन्हें निरन्तर नअी प्रेरणा देता रहता है। "सूर्य घर-घर पहुंचता है, अुसकी रोशनी जितनी राजाको मिलती है, अुतनी ही भंगीको। भगवान् कभी अपनी चीजका विषम बंटवारा नहीं करता। अगर अुसने हवा, पानी, प्रकाश और आकाशके वितरणमें कोअी भेदभाव नहीं किया, तो यह कैसे हो सकता है कि वह जमीन सिर्फ मुट्ठीभर लोगोंके हाथमें रहने देगा, सबको समान भावसे नहीं बांटेगा? मैं यह नहीं कहता कि जिनके पास जमीन है, अुन्होंने वह बेअीमानीसे ही हासिल की है। कुछ लोगोंने अुसे अपनी सेवाओंके पुरस्कारके रूपमें पाया होगा, और कुछने अुसके लिअे कड़ी मेहनत और अुद्योग किया होगा। लेकिन अैसे लोग भी कम नहीं हैं, जिन्होंने अुसे अनुचित अुपायोंसे कमाया है। जो भी हो, वस्तुस्थिति यह है कि अेक ओर थोड़ेसे अैसे लोग हैं जिनके पास जमीन है, और दूसरी ओर बहुतसे लोग अैसे हैं जिनके पास जमीन नहीं है। यह बात भगवान्‌की मर्जीके खिलाफ है। आखिर तो दुनियामें अुसीकी मर्जी चलनी चाहिये। शायद यही कारण है कि अुसने मुझे लोगोंको समझा-बुझाकर, अुनसे प्रेमपूर्वक गरीबोंके लिअे जमीन मांगनेके अिस क्रांतिकारी कार्यक्रमका निमित्त बनाया है। नहीं तो मुझमें क्या शक्ति है कि लोग मुझे स्वेच्छासे अपनी जमीन अिसलिअे दे दें कि मैं अुसे गरीबोंमें बांट दूं?" यह सत्य किसीके मुंहसे प्रगट होना था और अिसके लिअे विनोबासे योग्य दूसरा कौन हो सकता था, जिनके मनमें सबके कल्याणके सिवा कोअी दूसरी अिच्छा नहीं है, और सबके लिअे सदिच्छा तथा गरीबोंकी सेवाके सिवा कोअी दूसरी भावना नहीं है? नरसिंहपुरमें वे अपने प्रार्थना-प्रवचनमें बोले: "मैं आपसे जमीन मांगता हूं, तो अिसमें न तो मुझे अपने लिअे कोअी विनय या संकोच मालूम होता है, न आपको देते हुअे यह लगना चाहिये कि आप कोअी बड़ी अुदारता दिखा रहे हैं। मैं तो गरीबोंकी ओरसे अुनका न्याय्य हिस्सा मांगता हूं।" विनोबा चाहते हैं कि लोग यह अच्छी तरह समझ लें कि हरअेक पृथ्वी-पुत्रका भू-माता पर समान अधिकार है।

अपने आन्दोलनकी विचार-भूमिका समझाते हुअे वे कहते हैं: "आप अपनी जरूरतें तय कीजिये और अुसके अनुसार अपनी योजना बनाअिये। दुनिया गलत रास्ते पर चल रही है। आप अपने यहां शुद्ध जीवनकी योजना करेंगे, तो अुसका पतन रुकेगा। और अैसा तब तक नहीं हो सकता, जब तक जमीनका अुचित बंटवारा नहीं होता। सवाल यह है कि क्या बंटवारा कानून या हिंसाका आश्रय लिये बिना हो ही नहीं सकता? चीन और रूसको देखिये और अुनसे सबक लीजिये। तेलंगानाने हिंसाकी व्यर्थता और अहिंसक क्रांतिकी शक्यता सिद्ध कर दी है। वहां हिंसा और कानून दोनों नाकामयाब रहे। कानून बनानेवालोंकी अपेक्षा कानून तोड़नेवाले अुसकी कमजोरियां ज्यादा अच्छी तरह जानते हैं। और कानून ही बनाना हो, तो वह भी अच्छेसे अच्छा बनना चाहिये। और अुसके लिअे आवश्यक अनुकूल वातावरण भूदानसे ही पैदा होगा।"

शुरूमें लोगोंको लगता था कि सिर्फ मांगनेसे जमीन कैसे मिलेगी? जब मिलने लगी तो कहने लगे, अिन छोटे-छोटे दानोंसे समस्याका हल नहीं हो सकेगा। विनोबाने कहा: "यह बात तो सही है, अिसीलिअे मैं चाहता हूं कि आप तय करें कि आप खुद कितनी जमीन दे सकते हैं और कुल कितनी जमीन अिस सवालको सुलझानेके लिअे पर्याप्त मानते हैं। मैं चाहता हूं कि आप अपने अधिकारकी जमीन पर अपना स्वामित्व छोड़ दें। जमीन पर मालिकीका हक रखना न तो अुचित है, न न्याय्य। लोग मुझसे पूछते हैं कि क्या सरकार अिस कामको अपने हाथमें नहीं लेगी? अुनका यह सवाल मैं समझ नहीं पाता। क्या सरकार जनतासे अलग है? सरकार तो वही करेगी, जो जनता अुससे चाहेगी।" और

www.vinoba.in

तब विनोबा अुन्हें सुनाते हैं कि आज तेलंगानामें किस तरह जमीन बांटी जा रही है: "हमारे कार्यकर्ता आज वहां बेजमीन भाअियोंको अुसी चिन्तासे ढूंढते हैं, जिस तरह कोअी पिता अपनी लड़कीके लिअे योग्य वरकी खोज करता है। आप अुनकी खुशीकी कल्पना तो कीजिये, जिन्हें बिलकुल पता नहीं है और अैसी हालतमें अेकाअेक किसी दिन सवेरे कोअी अुनके घर पहुंचता है और वे जमीनके मालिक बन जाते हैं। जिस बातका अुन्हें सपना भी नहीं था, वही हो जाती है। अहिंसक क्रांति अैसी होती है।"

करेलीमें, जहां विनोबाको हजार रुपया प्रति अेकड़ कीमतकी ३०० अेकड़से भी ज्यादा भूमि मिली, अेक मित्रने बताया कि अुसके लिअे कार्यकर्ताओंको बिलकुल प्रयत्न नहीं करना पड़ा; लोगोंने अपनी अिच्छासे ही दी है। विनोबाका सन्देश अुनके मुंहसे अुन लोगोंने सुना और अुन्हें प्रेरणा हुअी। अगर कार्यकर्ता अब अिसी सन्देशको अपने आसपास ले जायं और अिसके लिअे संघटित प्रयत्न करें, तो ज्यादा जमीन पाना कुछ कठिन नहीं होगा। अिस सिलसिलेमें विनोबा अपने कार्यक्रमको निश्चित रूप देनेकी बात सोच रहे हैं। हम लोग अुनकी घोषणाकी प्रतीक्षा करें।

स्वामी सीतारामजीका अुपवास

यह पत्र समाप्त करनेके पहले अिस सप्ताहकी अेक दूसरी महत्त्वपूर्ण घटनाका अुल्लेख करना जरूरी लगता है।

हम लोग अुस दिन अुमरनालामें थे। स्वामी सीतारामजीके अुपवासका ३४ वां दिन था। विनोबाजी स्वामीजीकी चिन्तासे बेचैन हो रहे थे। कहने लगे: "हम अितने बड़े और विशिष्ट सेवकको कैसे खो सकते हैं?" अिसलिअे अुन्होंने प्रधान मंत्रीको तार किया और परिस्थिति अब क्या है, अिसकी जानकारी मांगी। जवाहरलालजीने फौरन सारी जानकारी दी। अुन्होंने बताया कि वे क्या कोशिश कर रहे हैं और आंध्रवासियोंकी आंध्र प्रांतकी मांग पूरी करनेमें क्या-क्या कठिनाअियां आ रही हैं। छिंदवाड़ासे दिल्ली और गुन्टूरको तार और फोन आते-जाते रहे। रातको १० बजे विनोबाने स्वामीजीके मंत्रीको यह सन्देश दिया:

"कृपया अनशन तत्काल छोड़ दें। परिस्थिति देखकर मुझे लगता है कि अनशनसे काममें बाधा आ रही है, और अनशनके त्यागसे अुसकी सफलतामें मदद होगी। मुझे विश्वास है कि जवाहरलालजी पूरी कोशिश कर रहे हैं।"

स्वामीजीने अुपवास तो छोड़ दिया, लेकिन अभी तक सरकारकी ओरसे कोअी घोषणा नहीं हुअी है। अिसलिअे आंध्रवासी चिन्तित हैं। लेकिन स्वामीजीने विनोबाको वचन दिया है कि वे विनोबाकी सलाह लिये बिना कोअी नया कदम नहीं अुठायेंगे। विनोबाजीने भी अुन्हें भरोसा दिया है कि राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री अिस दिशामें पूरा प्रयत्न कर रहे हैं।

पेचिशका कष्ट

अिस सप्ताहमें चिन्ताका दूसरा कारण विनोबाकी तबीयतका था। अुन्हें २१-२१ मील चलना पड़ा, और वह भी सतपुड़ाके पहाड़ी रास्तेसे। वे भोजन करके विश्राम लेते हैं, और अुससे अुन्हें पाचन-क्रियामें मदद मिलती है। लेकिन यह विश्राम अुन्हें अिन दिनों नहीं मिला। अिसके सिवा, वे मूंगफली पीसकर अुसका दूध लेनेका प्रयोग कर रहे थे। अिन सब कारणोंका अुनके स्वास्थ्य पर बुरा परिणाम हुआ और अुन्हें पेचिशका कष्ट हो गया। तीन दिन तक प्रतिदिन आठ-आठ दस्त लगते रहे। कमजोरी अितनी आ गअी कि सलैकापा और हरैअीमें तो गांवमें पहुंचकर वे लोगोंसे बात भी नहीं कर सके। चलते-चलते रास्तेमें विश्रामके लिअे कअी बार वृक्षकी छांहमें बैठना पड़ता था। पेटकी अैसी दुर्बल हालतमें १५-२० मील चलना शरीरके लिअे असह्य हो रहा था। लेकिन अच्छे होने तक वे किसी अेक ही जगह ठहरनेके लिअे भी राजी नहीं हुअे। अुनका आग्रह था कि सागरमें १ली और २री अक्तूबरको हो रहे सर्वोदय सम्मेलनमें पहुंचना ही चाहिये। बड़ी मुश्किलसे करेलीमें अेक दिन रुकनेके लिअे तैयार हुअे। आहारमें परिवर्तन करके अुन्होंने रोग पर काबू पा लिया। अब वे स्वस्थ हैं और यात्रा ठीक चल रही है। दैनिक कार्यक्रममें भी थोड़ा परिवर्तन कर लिया है। आजकल सुबह ३-३० के बदले ३ पर ही अुठ जाते हैं, और हम सब पांचके बदले ४ बजे ही चल पड़ते हैं। अिस तरह यात्राका अधिकांश प्रातःकालकी ठंडी घड़ियोंमें पार हो जाता है और धूपसे रक्षा हो जाती है।

(अंग्रेजीसे) दा० मूं०

अेक सवाल

नगर कांग्रेस कमेटी, कैराना (यू० पी०) के अध्यक्ष नीचेका निवेदन करके पूछते हैं कि अैसे अवसर पर कार्यकर्ता लोग क्या करें?

> "निवेदन है कि नगर कांग्रेस कमेटी तहसील कैराना, डिस्ट्रिक्ट मुजफ्फरनगर (यू०पी०)में सरकारी तौरसे २१ सितंबर १९५१ को रचनात्मक कार्यक्रम मनाया गया, जिसमें जनता और कांग्रेस सभीने भाग लिया। सड़कों पर मिट्टी डाली गअी। अूंचा-नीचा हिस्सा बराबर किया गया। आदमी काफी जमा हुअे। मुकामी तहसीलदारका रवैया हरिजन जनताके साथ बहुत खराब रहा। गंदी गालियां देकर वे अुनको पुकारते थे और किसी किसीको तो बेंत तक मारी गअी। अिससे जनतामें सरकारके प्रति असंतोष बढ़ा। मैंने तहसीलदारसे कहा था कि गालियां देनेसे तो कार्य कम होगा और जनतामें असंतोष भी फैलेगा। मगर ये अंग्रेजी हुकूमतके समयके बिगड़े-दिमाग सरकारी कर्मचारी पता नहीं अिस चीजको कब महसूस करेंगे? अैसे अवसरों पर कार्यकर्ता क्या करें?"

मुझे मालूम नहीं अध्यक्षजीने तहसीलदारसे बात करनेके अलावा और कुछ किया या नहीं। अुनके निवेदनसे मैं मानता हूं कि अुस कार्यक्रममें वे भी शरीक थे। यदि निवेदनकी बात ठीक हो, तो अध्यक्षजीका धर्म था कि वे और दूसरे कांग्रेसी लोग अुसी वक्त अिस बातका सख्त विरोध करते और हरिजनोंके स्वमानकी रक्षाके लिअे जरूरत होती तो कामसे हट जाते और कार्यक्रमका बहिष्कार करते। अिससे नागरिकके स्वमानकी रक्षा कैसे करना, अिसका भी सब लोगोंको सबक मिल जाता। तहसीलदारका बरताव जैसा बताया गया है वैसा हो, तो नागरिकोंका धर्म है कि वे अुसकी अैसी बेजा बातकी सरकारमें भी रिपोर्ट करें। अैसे अवसरों पर कैसे बरतना, यह कार्यकर्ताओंको सहज ही मालूम होना चाहिये।

अहमदाबाद, १५-१०-'५१ मगनभाअी देसाअी

महादेवभाअीकी डायरी
[तीसरा भाग]
संपा० नरहरि परीख
कीमत ६-०-० डाकखर्च १-१-०
नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद-९

विषय-सूची **पृष्ठ**

चरखा — नये सन्देशका वाहक	कि० घ० मशरूवाला	३०५
राष्ट्रीय योजना — दो निष्ठायें: २	कि० घ० मशरूवाला	३०६
युग-पुरुषकी मांग	विनोबा	३०८
विनोबाकी अुत्तर भारतकी यात्रा – २	दा० मूं०	३१०
अेक सवाल	मगनभाअी देसाअी	३१२
टिप्पणियां :		
प्रधान मंत्री लियाकतअली खांकी हत्या	कि० घ० म०	३०५
शराबबंदी वरदानरूप है		३०६
अमेरिकाके बालकोंकी भेंट		३०६

www.vinoba.in